नातेदारी का अर्थ एवं परिभाषाएँ
(Meaning and Defination of Kinship)

नातेदारी का शाब्दिक अर्थ होता है – सम्बन्ध। यह सम्बन्ध दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच हो सकता है। समाज के सदस्य विभिन्न संबंधों से बंधे होते हैं। इनमें रक्त संबंध, विवाह संबंध तथा दूर के संबंध होते हैं। जब इन संबंधों को सामाजिक मान्यता मिली होती है, तो उसे ही नातेदारी व्यवस्था कहा जाता है।

प्रत्येक वयस्क व्यक्ति दो परिवारों से संबंधित होता है, (1) जनक परिवार – जिसमें उनका पालन पोषण होता है अर्थात जिसमें उसने जन्म लिया है। (2) जनन परिवार – जिसका निर्माण विवाह के द्वारा किया गया। इस प्रकार व्यक्ति दो परिवारों से संबंधित होता है। इन संबंधों से नातेदारी व्यवस्था का निर्माण होता है

चार्ल्स विनिक के अनुसार :—

"नातेदारी व्यवस्था में समाज द्वारा मान्यता प्राप्त वे संबंध आते हैं जो अनुमानित और रक्त संबंधों पर आधारित हो।"

ए० एस ब्राउन :—

"नातेदारी सामाजिक उद्देश्यों के लिए स्वीकृत वंश संबंध है तथा यह सामाजिक संबंधों के प्रचलित स्वरूप का आधार है।"

इनकी परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि नातेदारी समूह में परिवार के बाद वंश आते हैं। एक ही वंश के सदस्य नातेदार होते हैं। इसे सामाजिक मान्यता मिली होती है।

लेवी-स्ट्रास :—

"नातेदारी प्रणाली वंश अथवा रक्त संबंधी कर्म विषयक सूत्रों से निर्मित नहीं होती जो कि व्यक्ति को मिलती है। यह मानव चेतना में विद्यमान रहती है, यह विचारों की निरंकुश प्रणाली है, वास्तविक परिस्थिति का

रक्त विलास नहीं है।"

लेवी स्ट्रास का मानना है कि नातेदारी में प्राणिशास्त्रीय संबंध व समाज द्वारा संबंध दोनों आते है। नातेदारी को केवल रक्त संबंध पर आधारित नहीं मानना चाहिए, क्योंकि जहां दत्तक पुत्र-पुत्री को स्वीकार करने की परम्परा है, वहां वे नातेदारी में सम्मिलित है।

उपर्युक्त वर्णन के आधार पर नातेदारी व्यवस्था की अवधारणा को निम्न चार प्रकारों के आधार पर समझा जा सकता है—

(1) नातेदारी व्यवस्था का आधार रक्त संबंध व विवाह संबंध दोनों होते है।
(2) साथ ही इसके निर्माण का आधार रक्त संबंध नहीं बल्कि दत्तक पुत्र या पुत्री हो सकते है जबकि ये वास्तविक रक्त संबंधी नहीं हो सकते है।
(3) नातेदारी संबंध सामाजिक मान्यताओं से संबंधित है।
(4) नातेदारी व्यवस्था की प्रकृति मे भिन्नता देखी जा सकती है क्योंकि सामाजिक मान्यताएँ सभी समाजों की एक समान नहीं है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि नातेदारी व्यवस्था रक्त संबंधो, विवाह संबंधो और सामाजिक मान्यताओं पर टिकी हुई व्यवस्था है।